पत्थर पर मुकदमा



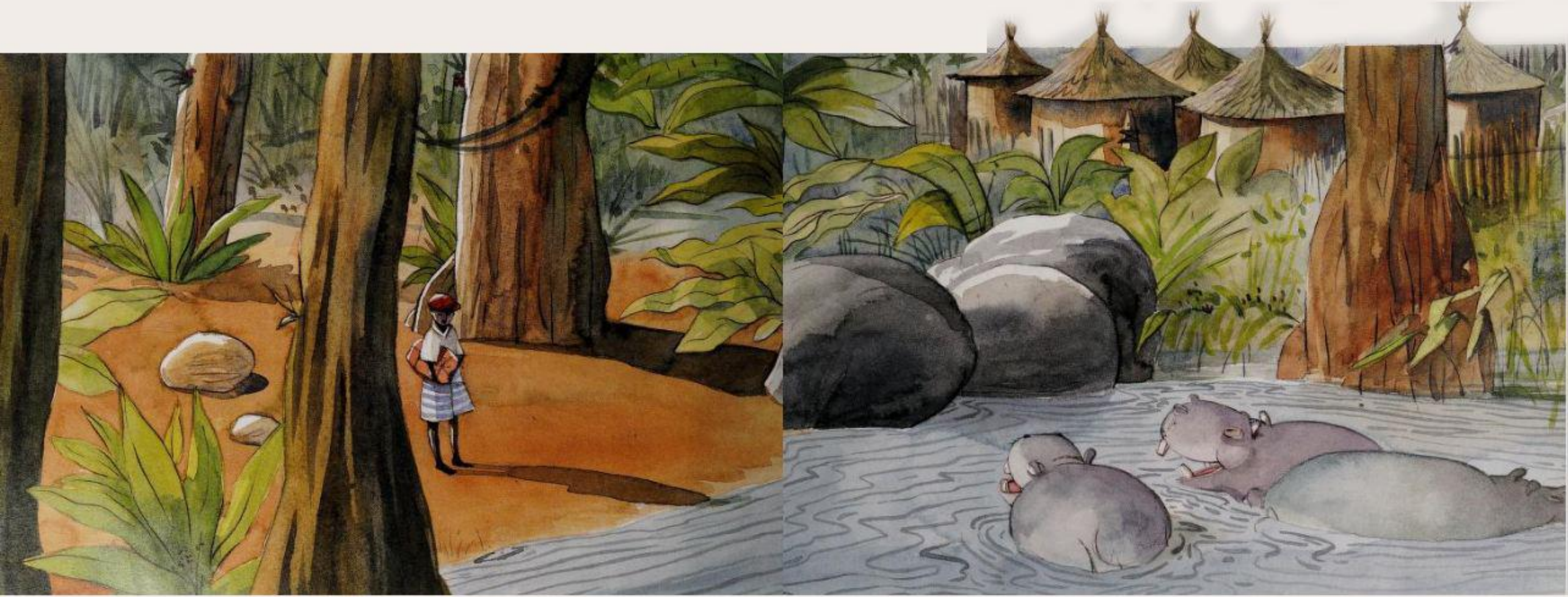
पत्थर पर मुकदमा

एक अफ़्रीकी लोककथा



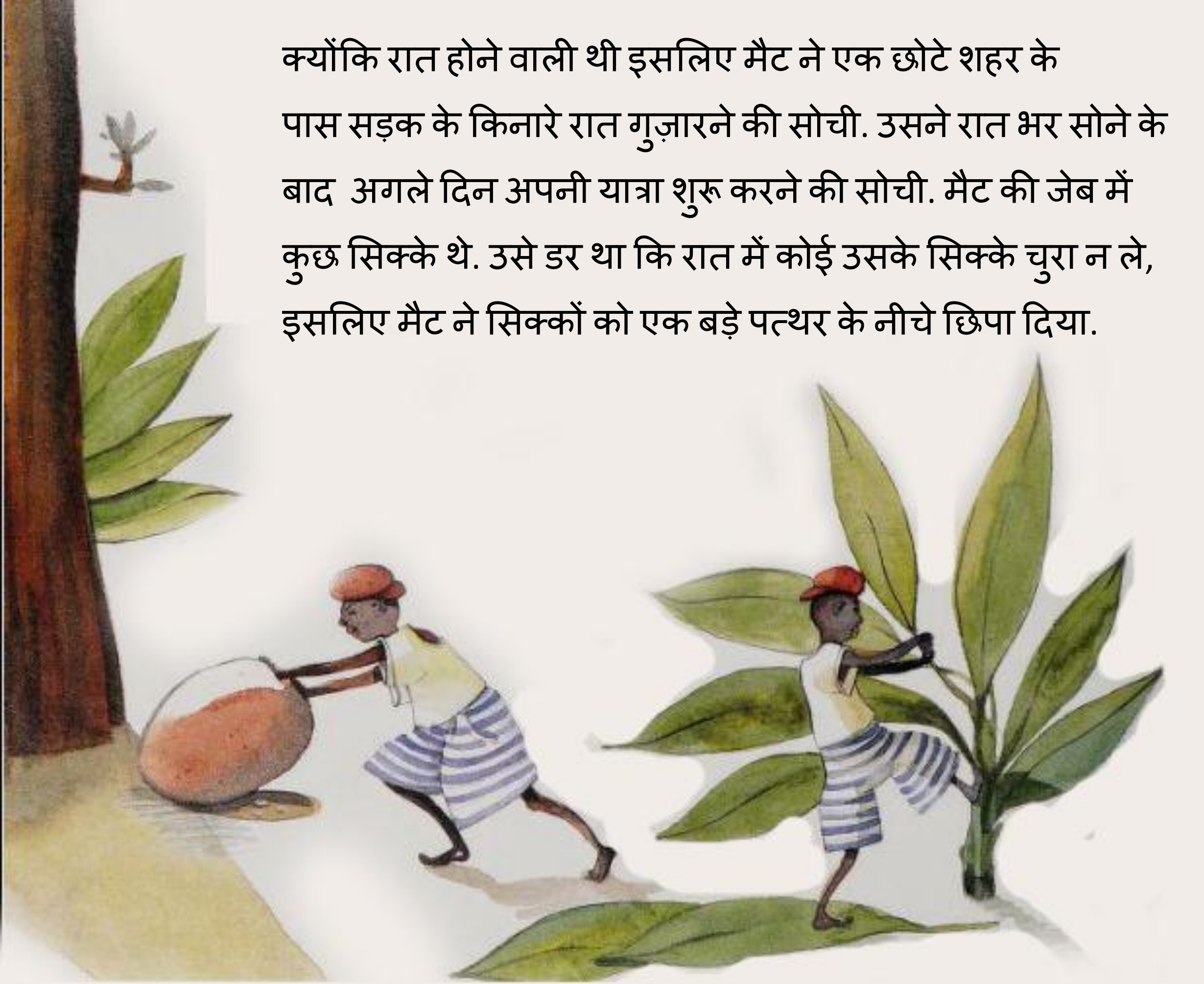


मैट नाम का एक लड़का सड़क पर पूरे दिन पैदल चला.

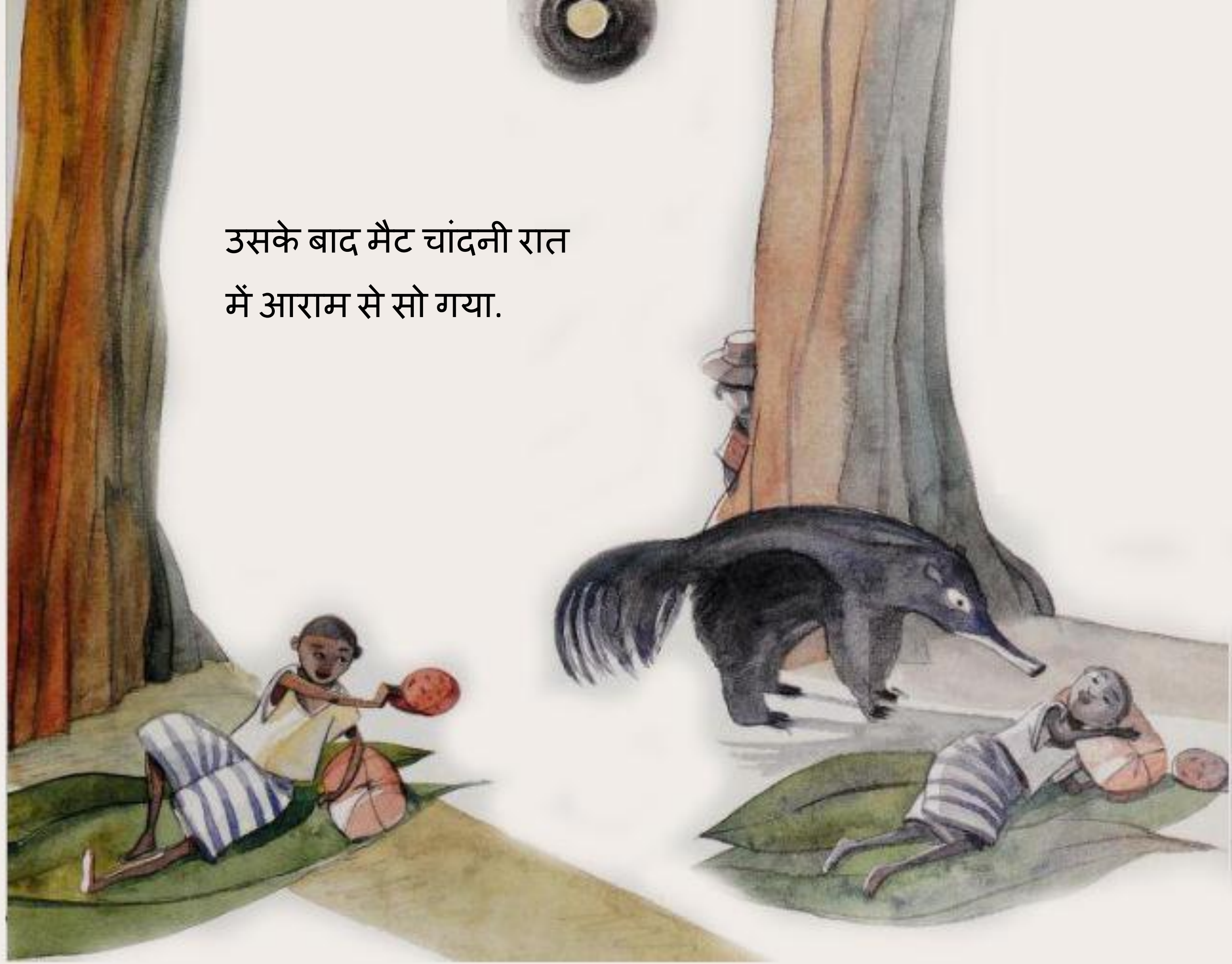


वो एक दूसरे गांव में अपने नानाजी के घर जा रहा था.

क्योंकि रात होने वाली थी इसलिए मैट ने एक छोटे शहर के पास सड़क के किनारे रात गुज़ारने की सोची. उसने रात भर सोने के बाद अगले दिन अपनी यात्रा शुरू करने की सोची. मैट की जेब में कुछ सिक्के थे. उसे डर था कि रात में कोई उसके सिक्के चुरा न ले, इसलिए मैट ने सिक्कों को एक बड़े पत्थर के नीचे छिपा दिया.



उसके बाद मैट चांदनी रात में आराम से सो गया.



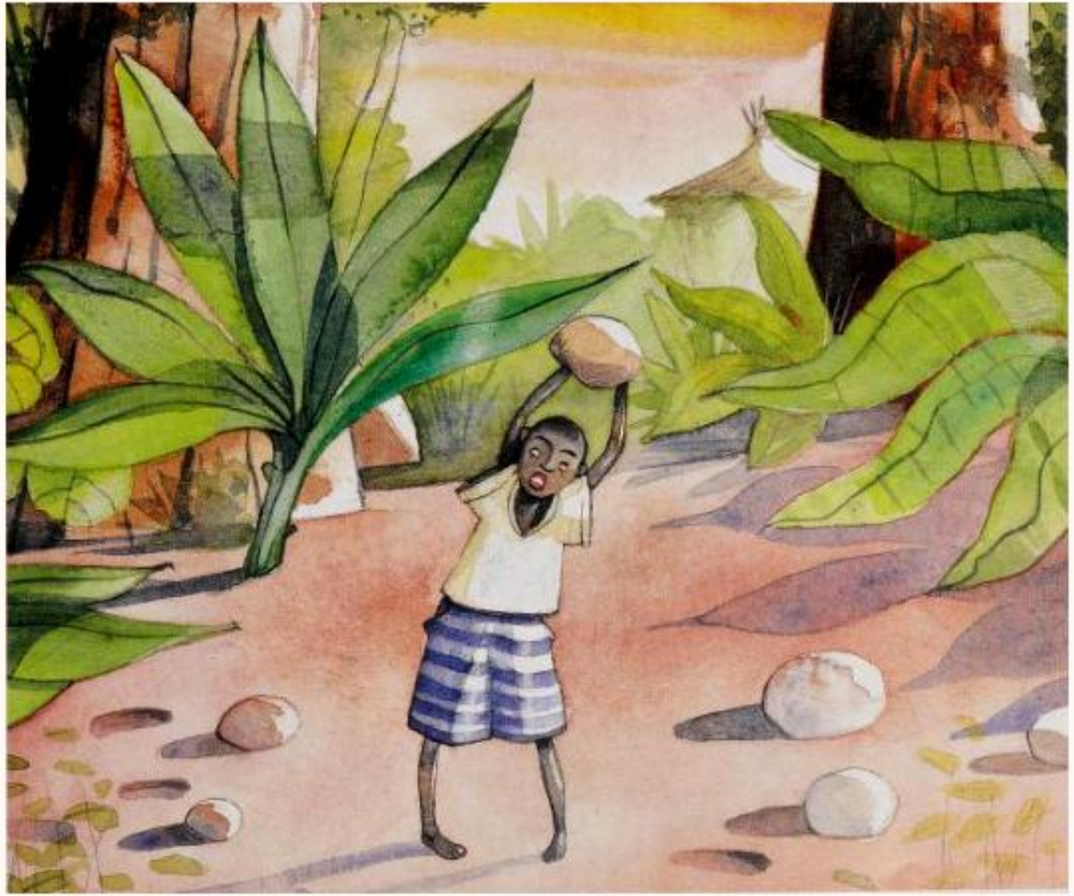
पर मैट अकेला नहीं था.



अगले दिन सुबह जब मैट उठा तो वो बहुत भूखा था. उसने पास की नदी में नहाने के बाद अपने लिए नाश्ता खरीदने की सोची. पर जब उसने पत्थर के नीचे से सिक्के निकालने की कोशिश की तो वहां उसे सिर्फ सूखी मिट्टी ही दिखाई दी.

उसने बड़ी मुश्किल से उस बड़े पत्थर को हटाया. मैट ने सब तरफ तलाशा. उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा.
वो सिक्के ही उसकी पूँजी थी. सिक्के न जाने कहाँ गायब हो गए थे? उसने फिर आसपास के सभी पत्थरों के नीचे तलाशा. पर उसे सिक्के कहीं नहीं मिले.





उसके बाद मैट फूट-फूट कर ज़ोर से रोने लगा. उसका रोना सुनकर शहर के लोग दौड़े-दौड़े वहां आये. वो मैट के दुःख का कारण जानना चाहते थे. साथ में शहर का चीफ और कोतवाल भी आए.

फिर मैट ने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई.

"क्या तुमने सोने से पहले किसी को अपने आसपास देखा?" चीफ ने पूछा.

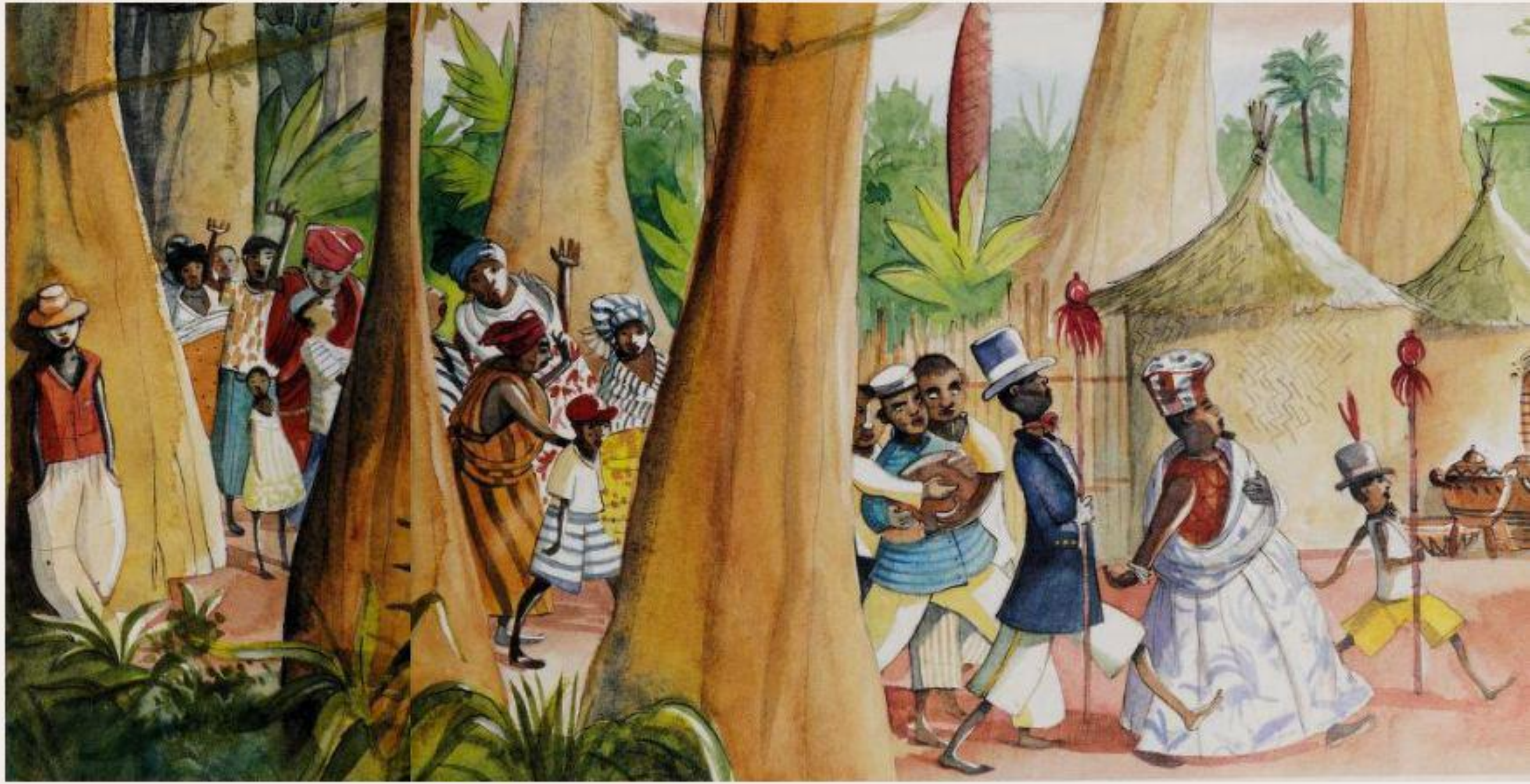




मैट ने किसी को भी अपने आसपास नहीं देखा था.
"वो कौन का पत्थर था?" चीफ ने पूछा. मैट ने चीफ को वो पत्थर दिखाया जिसके नीचे उसने सिक्के छिपाए थे. फिर चीफ ने माथा खुजलाया और अपना हाथ उठाकर कहा, "कोतवाल इस पत्थर को गिरफ्तार करो! उस पर चोरी के इलज़ाम का मुकदमा चलेगा."
कोई भी इंसान वहां से नहीं हिला.
लोगों ने लगा कि उन्होंने कुछ गलत सुना होगा.
"उस पत्थर को सीधे कचेहरी में ले जाकर पेश करो," चीफ ने कहा.
"तुम किसका इंतज़ार कर रहे हो. जल्दी करो!"



उस भारी पत्थर को कचेहरी तक उठाकर ले जाने के लिए तीन हट्टे-कट्टे पुलिसवाले लगे. तब तब कचेहरी में तमाम भीड़ जमा हो गई थी. लोग इस विचित्र केस को सुनने के लिए बेहद उत्सुक थे. कोतवाल ने भीड़ के शोर को चुप कराया. इस बीच पत्थर और मैट, चीफ के पास खड़े रहे.



इससे पहले कि कोर्ट की कार्यवाही कुछ आगे बढ़ती, बत्तखों का एक झुंड कोर्ट के आंगन में घुस गया. उन्हें बड़ी मुश्किल से वहां से निकाला गया.

"पत्थर, क्या तुमने इस लड़के मैट के सिक्कों की चोरी की?" चीफ ने पूछा.

पत्थर ने कोई उत्तर नहीं दिया.







फिर चीफ ने क्लर्क से डायरी में यह लिखने को कहा कि - पत्थर जवाब देने से इंकार कर रहा है. यह सुनकर लाल कमीज पहने एक आदमी हंसने लगा. कोतवाल ने उसे डांटा और चुप कराया.

"पत्थर तुम सड़क के किनारे क्या कर रहे थे?" चीफ ने पूछा.

पत्थर ने कोई जवाब नहीं दिया. फिर भीड़ में से कुछ और लोग हंसने लगे.

"सब लोग शांत रहें," चीफ ने गंभीरता से कहा. "पत्थर, ज़रा अपने गांव का नाम तो बताओ?" चीफ ने पूछा.



पत्थर के कोई जवाब नहीं दिया.

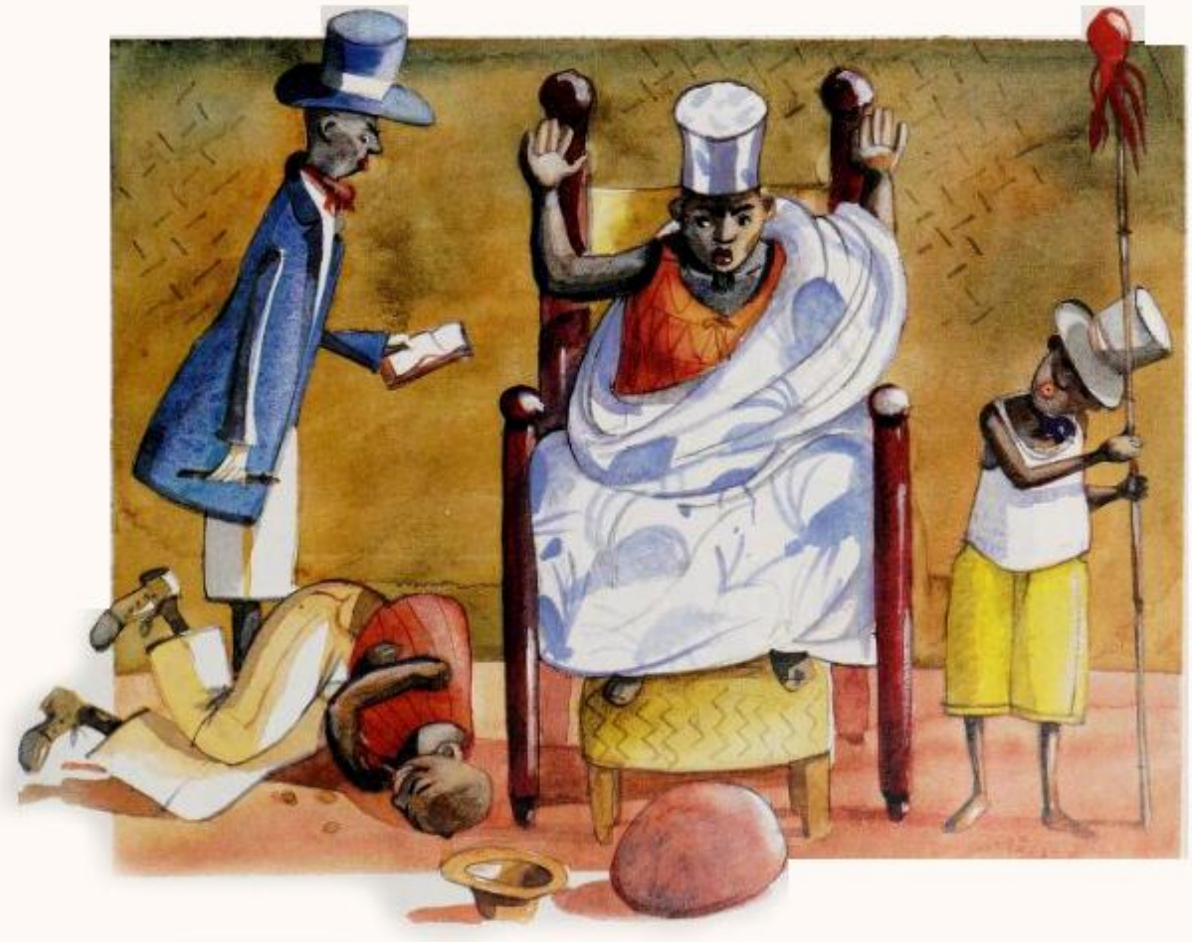
पर तभी हंसी रोकने के लिए एक औरत ने दुपट्टे को अपने मुंह में घुसाया.

"अच्छा पत्थर, यह बताओ कि तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं?" चीफ ने अगला सवाल पूछा.





पर इस बार भी बेचारा पत्थर मौन ही रहा. फिर चीफ ने क्लर्क को आदेश दिया कि वो लिखे कि पत्थर ने जवाब न देकर कोर्ट का अपमान किया था, इसलिए उसे सज़ा दी जाएगी. यह सुनकर पत्थर न तो रोया और न ही हंसा, पर भीड़ खिलखिलाकर ज़रूर हंसी. लाल कमीज वाला आदमी हँसते-हँसते लोटपोट होकर ज़मीन पर गिर पड़ा.



यह देखकर चीफ उठकर खड़ा हुआ और क्लर्क पर चिल्लाया. "यह दर्ज़ करो कि जजमेंट को सुनकर भीड़ ने बहुत शोर मचाकर कोर्ट का अपमान किया." शोर मचाने के लिए चीफ ने हरेक दर्शक पर एक-एक सिक्के का जुर्माना लगाया. कोतवाल ने कोर्ट में मौजूद हरेक दर्शक से एक-एक सिक्का वसूल किया. वो सारे सिक्के चीफ ने मैट को थमा दिए.



इससे मैट बेहद खुश हुआ और वो अपने नानाजी के घर के लिए रवाना हुआ. पर पहले उसने पेट भर कर नाश्ता किया!



चीफ ने लाल कमीज वाले आदमी को आदेश दिया कि वो अकेले पत्थर को लुढ़काकर सड़क के किनारे उसी स्थान पर वापिस रखकर आए.



समाप्त